

NON UCL

(18)

2016-17

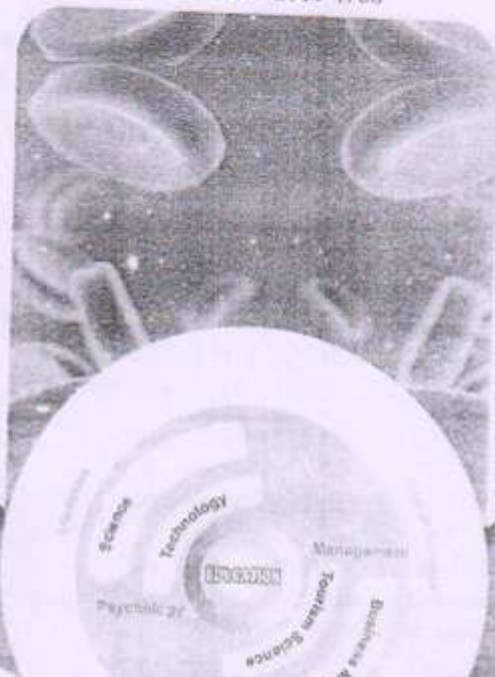
3 ZEROX



SRJIS

Online ISSN - 2278-8808
Printed ISSN - 2319-4766

41



An International
Peer Reviewed

Referred
Quarterly

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

SPECIAL ISSUE OCT-DEC, 2016, VOL. 5, ISSUE - 15

EDITORIAL BOARD: DR. P. S. SURESH, DR. P. S. SURESH, DR. P. S. SURESH, DR. P. S. SURESH, DR. P. S. SURESH

4-84

5-92

3-99

10-104

15-118

हिंदी विभाग :

१७.	अनुसंधान कार्य : एक दृष्टिकोण डॉ. नितीन पाटील	119-124
१८.	हिंदी अनुसंधान के क्षेत्र में विभिन्न संभावनाएँ डॉ. पी. व्ही. कोटरे	125-133
१९.	सत्यकाम काव्य शरः एक अनुसंधान प्र. डॉ. मूलका अय्यंगर	134-140
२०.	भाषा में तुलनात्मक अनुसंधान एक दृष्टिकोण प्र. डॉ. सी. विजय प्रसाद शर्मा	141-144
२१.	मधु कारंकरिया का उपनाम 'पत्ताखोर' में सामाजिक दृष्टि प्र. मंगला प्रभूराज भंडार	145-148
२२.	साहित्यिक अनुसंधान एक यथार्थ प्र. मनिषा नाई	149-152

भाषा में तुलनात्मक अनुसंधान एक दृष्टिकोण

प्रा.डॉ.सौ. मिनल प्रमोद बर्वे

कै.विं. संसद देशमुख कला व वाणिज्य महिला महाविद्यालय नाशिकसेड

शोधार्थी के लिए शोध एक साधना है। नई नई जिज्ञासाओं, कुतूहलों का उदय मानव मन में स्वभावतः होता रहता है। इस दृष्टि से शोध साधना का आरम्भ यदि विषय निर्वाचन से होता है, तो उसका समापन बिंदु प्रबंध का प्रस्तुतिकरण है। भाषा भावभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन है। भाषा द्वारा ही जीवन ही सरस अभिव्यक्ति की जाती है। साहित्य मानव जीवन के लिए ही उपयोगी होता है, सत्य को खोज करना मानव की जिज्ञासा रही है। हमारे देश के अनेक ऋषिमुनियों ने अपने मन को शांत रखने के लिए अनेक अनुसंधान किये हैं। उन्होंने जंगलों में रहकर अनेक मौलिक बातों को खोज निकाला है, उनकी व्याख्याएँ की हैं। पश्चात्प देशों ने भी इस भौतिक जगत के अनेक आश्चर्य कारक बातों को खोजा है। जिस बात पर हम केवल कल्पना ही किया करते थे उन बातों को जगत के सामने लाया है। जैसे चाँद को हम काव्य में पढ़ते तो थे लेकिन इन लोगों ने उस पर पैर रखकर बातें सामने लायी हैं।

हिंदी भाषा के तुलनात्मक अनुसंधान का अध्ययन करते समय अनुसंधान, प्रकार अनुसंधान में तुलनात्मक आवश्यकता, हिंदी भाषा में अनुसंधान, महत्व आदि विषयों पर विचार करणाय है।

अनुसंधान के विषय के प्रकार का अध्ययन करते समय यह दृष्टिगोचर होता है कि, सृष्टि के जितने रूप हैं उतने ही अनुसंधान के प्रकार होते हैं। उदाहरण के लिए वैज्ञानिक, दार्शनिक काव्यरूप, शास्त्ररूप, पुराण तथा इतिहास काव्यानुसंधान, तथ्यानुसंधान, भावानुसंधान विचारानुसंधान भाषानुसंधान आदि।

भाषासंबंधी अनुसंधान में देशी-विदेशी शब्द चयन, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, भाषा की अभिव्यञ्जनाशक्ति आदि का अनुसंधान होता है। इसमें दो भाषाओं का तुलनात्मक अनुसंधान भी होता है।



सहकारवाचक परिषद

ISSN 0973-8452

मराठी अर्थशास्त्र परिषदेचे त्रैमासिक

अर्थसंवाद

भारतीय सीर घोष-फाल्गुन १९९७
जानेवारी-मार्च २०१६ / खंड ३९ अंक ४

26

42



शेती आधारित उद्योग विशेषांक

२
धी.....

लोककल्याणमूलस्य अर्थशास्त्रस्य सिद्धये। शोधचर्चाविवादार्थं संवादोऽयं प्रवर्तितः॥

मराठी अर्थशास्त्र परिषदेचे त्रैमासिक

अर्थसंवाद

जानेवारी-मार्च २०१६ / खंड ३९ अंक ४

International Research Journal

ISSN 0973-8452

Reg. No. 31918/77



www.marthpari.org

www.marthpari.org

प्रमुख संपादक
अविनाश रामलाल निकम

सहाय्यक संपादक
शंकर सुदामराव पवार

सहाय्यक संपादक
(२०१५-१६)

तेजस्विनी मुडेकर
अरुण पिसे

राजेंद्र गव्हाळे
विजय भापाळे

संपादकीय पत्रव्यवहार
डॉ. अविनाश निकम

मातृपितृ कृपा, प्लॉट नं. ३०,
परिमल कॉलनी,

यशवंत क्लासेसच्या मागे,
शहादा-४२५४०९

जिल्हा नंदुरवार.
मोबा: ९८२२६६५१४१

लेखातील मते लेखकांचीच

अ



उ



क्र



म



णि



का

अविनाश निकम, शहादा संपादकीय संवाद: शेतमाल प्रक्रिया उद्योगातील संधी.. ३३३	३३३
चारुदत्त गोखले, जळगाव मराठी अर्थशास्त्र परिषदेचा आघातस्तंभ वासळला	३३५
सुहास आम्हाडे, संगमनेर स्वतंत्रपौर भारतातील विदेशी गुंतवणूक	३३७
सादिक सय्यद, कर्जत अहमदनगर जिल्हातील साखर उद्योगाची स्थिती.....	३५३
रूपा शहा, कोल्हापूर शेती आधारित उद्योग-सद्यस्थिती व भवितव्य	३५९
विनायक देशपांडे, नागपूर महाराष्ट्र भूषण डॉ.माधवराव चितळे	३६४
दिपा होळकर, नाशिक नाशिक जिल्हातील द्राक्ष वाईन उद्योगाच्या समस्या ...	३६७
प्रमिला पाटील, कोल्हापूर गुन्हाळधरे-शेतीमाल आधारित उद्योग	३७३
शिवाजी डगे, पुणे महाराष्ट्रातील द्राक्ष उत्पादकांच्या समस्या.....	३८१
कुमुदिनी जोगी, अचलपूर शेती आधारित उद्योग व ग्रामीण विकास.....	३९१
निकिता भोरे, सांगली फळे व भाजीपाला सहकारी संस्था	३९६
लाजवंती टेंपुणे, मोशी भारतातील शेतीमाल प्रक्रिया उद्योग.....	४०२
सुरेश डमवरे, पुणे महाराष्ट्रातील शेती आधारित उद्योग: सद्यस्थिती.....	४०७
जितेंद्र तलवारे, देवपूर भारतातील कृषी प्रक्रिया उद्योगातील संधी.....	४१४
रामलिंग नाळे, सरुड शेती आधारित उद्योग: ग्रामीण विकासातील भूमिका ..	४१९
सूत्रसंचालकाचा अहवाल- ३९ वें अधिवेशन रामहरी दातीर, हरिहर त्रिवारी, विठ्ठल चिनमिने.....	४२३
रूपा शहा, जयश्री उपाध्ये, विद्या पाटील.....	४२५
कार्यवाहांचा अहवाल- आर.बी.भांडवलकर.....	४२७
संपादकांचा अहवाल- अविनाश निकम.....	४३४

म पाणी
मागातून
न आणि
मात्रांच्या
तीव कार्य
तिरविण्यात
दिवसाच्या
गारितोषिक
ते. ऑगस्ट
या जागतिक
००० युएस
होम पुरस्कार
येते. १९९३
खांची निवड

ण्याचे संवर्धन
सर्जनशीलतेने
खल जागतिक
स्काराइटकीच
प्रतिष्ठा आणि
यांच्या कामाची
शेष उल्लेखनीय.
श्यास असलेल्या
ग्राईम्सच्या अत्यंत
काराने सन्मानित
मुख्यमंत्र्यांचे हस्ते
ल तेवढेच मानाचे
नी सिंचन आणि
प्रकारे केलेल्या
ज्ञतेचा मुजर आहे!
र्त. माधवराव चितळे

अर्थसंवाद

नाशिक जिल्ह्यातील द्राक्ष वाईन उद्योगाच्या समस्या व उपाय

होळकर दिपा कैलास, नाशिक,
के. बिंदू रामराव देशमुख कला व वाणिज्य,
महिला महाविद्यालय,
भ्रमणध्वनी: ९८८९३७९०५६.

नाशिक जिल्हा आज द्राक्ष विक्रीबरोबरच द्राक्ष वाईनची आंतरराष्ट्रीय बाजारगेठ विक्री करण्यात काही प्रमाणात यशस्वी झाला आहे. महाराष्ट्रातील द्राक्ष निर्यात लक्षात घेऊन द्राक्ष किमतीत स्थिरता येण्यासाठी व नैसर्गिक परिस्थितीचा फायदा घेऊन रोजगार वाढविण्यासाठी सरकारने कृषीफळ प्रक्रिया उद्योगाला चालना देण्याचे ठरविले व त्यातूनच २००१ मध्ये महाराष्ट्र सरकारने पुढाकार घेऊन द्राक्षापासून वाईन तयार करण्याचे धोरण आखले. त्याचा परिणाम म्हणजे नाशिक, सांगली, पुणे या तीन जिल्ह्यात द्राक्ष निर्मितीस पोषक असणाऱ्या वातावरणामुळे वाईनरींची संख्या वाढली परंतु संख्यात्मक वाढ झाली असली तरी गुणवत्तेच्या बाबतीत काही प्रश्न निर्माण झाले. आणि अल्पावधीतच काही वाईनरी बंद पडल्या. प्रचंड भांडवली गुंतवणूक असणाऱ्या या द्राक्ष वाईन उद्योगाच्या समस्या अभ्यासणे आणि त्यावर उपाय सूचविणे हा या संशोधनपर लेखाचा प्रमुख उद्देश आहे.

महाराष्ट्रातील द्राक्ष वाईनरींची संख्या जर विचारात घेतली तर नाशिक - ३८, सांगली - १५, पुणे - ९, सोलापूर - ४, बुलडाणा - ३, उस्मानाबाद - २, तळेगाव - १, एकूण - ७२. भारतातील वाईन पंढरी म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या नाशिक जिल्ह्यात अल्पावधीतच ३८ वाईनरी उभ्या राहिल्या आणि त्यातील आजच्या स्थितीत १० वाईनरी बंद पडल्या. नाशिक जिल्ह्यातून दरवर्षी ७० लाख लीटर पेक्षा अधिक उत्पादन होते व ७५ हजार केसेसची विक्री होते. (१ केस = ९ लीटर) वाईनसाठी आवश्यक असणारे द्राक्षे हे ६००० एकर क्षेत्रावर पिकवले जातात व दरवर्षी त्यात १०० एकरची भर पडत आहे. वाईन द्राक्ष निर्मिती करणारे जवळ-जवळ एक हजार शेतकरी असून नाशिकमध्ये

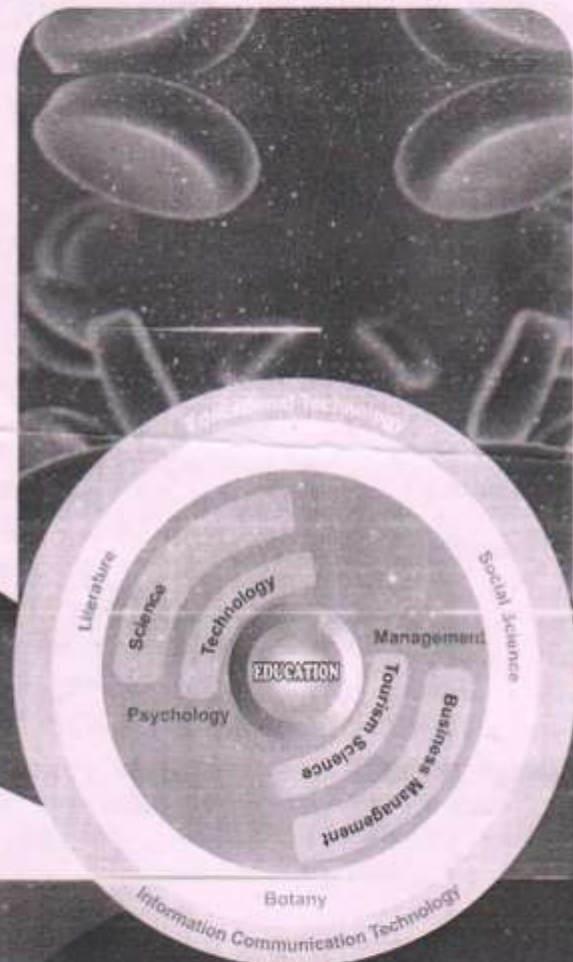
Non UGC



SRJIS

Online ISSN -2278-8808
Printed ISSN- 2319-4766

19
2016-17



An International
Peer Reviewed

Referred
Quarterly

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

SPECIAL ISSUE OCT-DEC, 2016. VOL. 5, ISSUE -20

EDITOR IN CHIEF: YASHPAL D. NETRAGANWAR, P.L.B.

31	विजन : महानगरीय में स्थित ग्रामीण मानसिकता प्रा. सुनिता बबन पट्टे	111-112
32	महानगरीय विमर्श की गाथा : कलिकथा : वाया बाइपास शेख सुमैया चांदमाई	113-115
33	जल टूटता है उपन्यास में ग्राम्य विमर्श दरदले शामल रंगनाथ	116-118
34	सुरेद्र वर्मा के उपन्यासों में महानगर- विमर्श प्रा. डॉ. जिनबाबराव विश्वासराव पाटील	119-123
35	रामदरश मित्र के उपन्यास : महानगरीय समस्याएँ प्रा. रघुनाथ नामदेव काकडे	124-127
36	उदय प्रकाश के कहानी साहित्य में महानगर-विमर्श श्री. शरद काशेरकर शिरोडे	128-131
37	समकालीन हिंदी लेखिका कृष्णा सोबती के उपन्यासों में ग्रामविमर्श प्रा. डॉ. सी. बर्वे मिनल प्रमोद	132-135
38	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में ग्राम विमर्श प्रा. अशोक गोविंदराव उषडे	136-138
39	समकालीन हिंदी उपन्यासकार रामदरश मित्र के उपन्यासों में ग्राम-विमर्श प्रा. यांगुडे सगाधान जयवंत	139-142
40	गीतात्री की कहानी 'टाउनलोट होते है सपने' में महानगरीय विमर्श प्रा. डॉ. दिग्विजय टेंगसे	143-144
41	'आपका बंटी' उपन्यास में चित्रित नगरीय जीवन काकडे पुष्पलता विठ्ठलराव	145-146
42	शांताकुमार के उपन्यासों में ग्रामीण विमर्श प्रा. निरंजन दत्तात्रेय पंडीत	147-150
43	कहानी साहित्य में चित्रित ग्राम विमर्श (विवेकीरय की कहानियों के विशेष संदर्भ में) प्रा. डॉ. डी. एन. टिळकर	151-155
44	मनिषा कुलश्रेष्ठ लिखित 'शिगाफ' उपन्यास में महानगरीय विमर्श श्रीमती जयश्री पवार & डॉ. मंगूर सैल्यद	156-158
45	समकालीन हिंदी कविता महानगरीय विमर्श दसवें दशक की कविता में मानव, मानविय सम्बन्ध और सामाजिक मूल्यों की अभिव्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में डॉ. कल्पना सतीश कावडे	159-164
46	समकालीन हिंदी कविता में आदिवासी अस्मिता बोध विशेष संदर्भ- 'पहाड हिलाने लगा है वाहक सोनवणे प्रा. शांतासम बळवी	165-169
47	मीरा कृत लिखित उपन्यास 'एक कोई था कहीं नहीं सा' में महानगरीय विमर्श माधुरी वास्तवे & डॉ. पो. व्ही. कांठमे	170-173

37. समकालीन हिंदी लेखिका कृष्णा सोबती के उपन्यासों में ग्रामविमर्श

प्र.डॉ.सौ.बर्वे मिनल प्रभोद, कैम्ब्रिज समकाल देशमुख कला एवं वाणिज्य महिला महाविद्यालय, नासिकरोड.

समकालीन महिला लेखिकाओं में कृष्णा सोबती का स्थान महत्वपूर्ण है। उनके उपन्यास साहित्य के ग्रामविमर्श को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा ग्रामीण नारी जीवन के अंतर्गत रखा जा सकता है। कृष्णाजी के उपन्यास के ग्रामजीवन के सामाजिक पक्ष पर विचार करने के बाद यह दिखाई देता है कि, परिवार, नारी जीवन, शिक्षा, प्राकृतिक प्रकोप, सामाजिक शोषण, रूढ़ियाँ एवं परंपराएँ, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास, अन्याय और अत्याचार और कुलीन वर्ग की खोखली जिंदगी आदि का चित्रण हुआ है।

कृष्णाजी के उपन्यासों के आर्थिक ग्राम विमर्श पर अध्ययन करने के बाद यह परिलक्षित होता है कि गरीबी, धन का अभाव, लालच, गैरी-गैरी की तलाश, अर्थात्न के मर्यादित मार्ग, चोरी करना, धन के लिए अत्याचार करना इसका चित्रण दृष्टिगोचर होता है। कृष्णा सोबती के उपन्यास के ग्रामीण जीवन के सांस्कृतिक पक्ष में पर्व त्योहार, स्वी-परंपरा, लोकगीत आदि का चित्रण दृष्टिगोचर होता है।

कृष्णाजी के उपन्यासों के राजनीतिक पक्ष का चित्रण कम दिखाई देता है। परंतु जितना भी लेखन किया है, वह प्रभावी किया है। इसमें आजादी के बाद खोखली राजनीति, भ्रष्टाचार, एडप्टेड, मूल्यहीनता, अहंकार आदि का चर्चा चित्रण दिखाई देता है।

कृष्णाजी के धार्मिक, ग्रामीण चित्रण में बहुपत्नी प्रथा अनमेल विवाह, देवी-देवताओं की पूजा, भय-तंत्र, कर्मकांड, व्रत-उपवास, भजन-कीर्तन, संतान प्राप्ति के लिए पूजा करना, मनौतियाँ-मानना, धर्मनियम, तीज-त्योहार, स्वी-परंपरा, लोकगीत आदि का चित्रण दृष्टिगोचर होता है। ग्रामीण नारी जीवन का चित्रण कृष्णाजी के उपन्यासों में दिखाई देता है। अशिक्षित, परावलंबी, विकृत नारी, भोग्या नारी, आधुनिक नारी, अत्याचार से पीड़ित नारी ऐसे अनेक रूपों में नारी का चित्रण कृष्णाजी के उपन्यासों में दृष्टिगोचर होता है। अतः कृष्णा सोबती का साहित्य नारी को प्रेरणादायी बन गया है। संक्षेप कृष्णा सोबती एक समकालीन श्रेष्ठ साहित्यकार है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में समकालीन साहित्य विशेष महत्वपूर्ण है। समकालीन महिला कथाकारों में मनु बंडारी, उषा प्रियवंदा, कृष्णा सोबती, चित्रा मृदाल, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा आदि प्रमुख कथाकारोंने साहित्य में बड़ी हलचल मचा दी थी। वहाँ कृष्णा सोबती के उपन्यास साहित्य के ग्राम- विमर्श पर अध्ययन करने के बाद यह परिलक्षित होता है कि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा ग्रामीण नारी जीवन के अंतर्गत इसे रखा जा सकता है।

सामाजिक पक्ष पर विचार करने के बाद यह दिखाई देता है कि परिवार, नारी जीवन, शिक्षा, प्राकृतिक प्रकोप, सामाजिक शोषण, रूढ़ियाँ एवं परंपराएँ, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास, अन्याय और अत्याचार और कुलीन वर्ग की खोखली जिंदगी आदि का चित्रण हुआ है। कृष्णा सोबती के 'झर से बिरुड़ी', 'मिठो मरजानी', 'जिंदगीनामा' आदि उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का सामाजिक पक्ष चित्रित हुआ है। इसमें ग्रामीण लोगों में शिक्षा का अभाव, स्कूलों की इमारतों और सुविधाओं का अभाव, भ्रष्टाचार, अनास्था, अंधविश्वास, जात-पात आदि कारणों से ग्रामीण श्रेय शिक्षा से वंचित रहते हैं। ग्रामों में गरीबों का शोषण करनेवाले बहुत होते हैं। कृष्णाजी के उपन्यास

Non U4C.

28

15-17

45

Impact Factor Value : 6.310

ISSN : 2278-9308

Sanshodhan Samiksha

Humanities, Social Sciences, Commerce,

Education, Law and Language

Monthly Peer Reviewed International Research Journal

September - 2016



- Chief Editor - Prof. Virag S. Gawande
- Editor - Dr. Sanjay J. Kothari
- Editor - Dr. Dinesh W.Nichit

□ PUBLISHED BY □

AADHAR SOCIAL RESEARCH & DEVELOPMENT TRAINING INSTITUTE, AMRAVATI, MS.

INDEX

1	प्रा. कमलेश एस. मानकर	घटस्फोटाला कारणीभूत वर्तमान स्थितीतील प्रेरके व कुटुंब न्यायालयाची भूमिका	1
2	प्रा. लखपती वा. गायकवाड	जीवन हे अनमोल!	5
3	प्रा. डॉ. सौ. यु. आर. पाटील	डॉ. आंबेडकरांचे स्त्रीमुक्तीविषयक विचार व कार्य	9
4	प्रा. विशाखा मानकर	कौटुंबिक/घरगुती हिंसाचाराचे परिणाम आणि सामाजिक दायित्व	15
5	प्रा. दीपक द. साखरे डॉ. चंद्रकुमार राहूले	झाडीबोली : एक अभ्यास	19
6	डॉ. वसंत रघुनाथ शेंडगे	सकलसंतांचे माउली : श्री ज्ञानेश्वर आणि ज्ञानेश्वरी	25
7	प्रा. डॉ. व्ही. एन. जाईले प्रा. दि. लक्ष्मण पाटील	खान्देशातील वैदूचे वास्तव चित्र	30
8	दिवाकर पी. चौधरी	नागपूर जिल्ह्यातील संतांचे स्वातंत्र्य चळवळील योगदान	34
9	प्रा. कु. वर्षा रामकृष्ण बोपचे	महाराष्ट्रातील आलेली महापुरे त्यातून झालेली आर्थिक, सामाजिक हानी (विशेषसंदर्भ - नरखेड तालुक्यातील मोवाड व इतर गावे)	37
10	प्रा. एल. बी. काकडे	इतिहासातील वंचित आदिवासी क्रांतीकारक	42
11	प्रा. माया अशोकराव मालेकर	संविधानोत्तर मागासवर्गीय आयोगाची भूमिका : राजकीय व सामाजिक स्थित्यंतरे	49
12	प्रदीप ओजेकर	स्मशानभोग- महानगरीय जीवनाचे भयान वास्तव	53
13	प्रा. सुधीर वि. बानुबाकोडे	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांची समाज परिवर्तनाची भूमिका	56
14	श्री. विठ्ठल भरत वाघमारे	संत सेना न्हावी : व्यक्ती आणि अभंगवाणी	61
15	प्रा. सुनील .एन. डेरे	सहकारी तत्वांचा विकास आणि व्यवहारात्मक उपयुक्तता	66
16	प्रा. संगीता सूर्यवंशी	मराठी वाङ्मयातील अमूल्यधन: लोकसाहित्य	73
17	प्रा. डॉ. सौ. संगीता दिपक सूर्यवंशी	रत्नागिरी जिल्ह्यातील लोकसाहित्यात आढळलेली प्रादेशिकता	82
18	डॉ. लता पवार	ग्रामीण कविता आणि वास्तव	84
19	प्रा. जगन्नाथ देवराज गोपाळ डॉ. के. डी. डेकणे	ब्रिटीशकालीन खानदेशातील शेती विषयक धोरण	93

ग्रामीण कविता आणि वास्तव

डॉ. लता पवार

बॉ. आर. डी. कला व वाणिज्य महिला महाविद्यालय, नाशिकरोड.

ग्रामीण जीवनदर्शनाचा प्रयत्न प्रथम कवितेतून झाला; नंतर कथा, कादंबरीतून ते वेळ लागले. सुरुवातीला 'गोप-गीते', 'किसान-गीते' या नावांनी ग्रामीण कविता ओळखली जायची. पुढे रविकिरण मंडळाच्या काळात तिला 'जानपद कविता' असे नाव मिळाले.

या कवितांमधून ज्या अनुभवांची अभिव्यक्ती साहित्यिक करित असतो ते अनुभव जीवनातून आलेले असतात. ज्या ग्रामीण समाजरचनेत लेखक वावरत असतात त्या समाजजीवनातील अनुभवच तो शब्दबद्ध करत असतो. ग्रामीण वास्तवातून साकार होणारे ते ग्रामीण साहित्य.

ग्रामव्यवस्था ही स्वतंत्र आणि स्वयंपूर्ण असते. ग्रामीण संस्कृती ही कृषी केंद्रित संस्कृती आहे. पूर्वापार शेतकरी हा ग्रामसंस्कृतीचा आणि कृषी जीवनाचा प्रमुख घटक राहिलेला आहे. शेतकरी या कृषी जीवनाच्या केंद्रस्थानी असतो. शेतकऱ्याला केंद्रस्थानी ठेवूनच संपूर्ण गावगाडा निर्माण झालेला आहे. या व्यवस्थेत शेतीशी निगडित पाऊस, पिके, शेत, विहिरी, गवत, झाडे, झुडपे, गाई, गुरे, पशु-पक्षी, नांगर, खर, कुळव, गोफण, आपले सण-उत्सव ही कृषीजीवनाशी निगडीत आहेत. नागपंचमी, पोळा, दसरा, गुढीपाडवा यासारखे सण इ. सर्व गोष्टी आपण शेतीपासून अलग करूच शकत नाही. त्याचबरोबर अलुतेदार-बलुतेदार, वारू-नारू, फिरस्ते, पाटोल-कुलकर्णी हे ही कृषी संस्कृतीचे महत्त्वाचे घटक आहेत. ग्राम संस्कृतीत हे सर्व घटक परस्पर पूरक भूमिका निभावत असतात. यात शेती ही नुसती उपजिविकेचे साधन नाही तर ती सातत्याची नवनिर्मिती असते. त्यामुळे शेती मातीशी संबंधित माणसाचे काही भावबंध निर्माण होतात.

कृषी संस्कृती ही निसर्ग सन्मुख संस्कृती आहे. या संस्कृतीत एकजीव होऊन जगणाऱ्या ग्रामीण माणसाचे स्वतःचे एक स्वतंत्र भावविश्व निर्माण होत जाते.

शेती निसर्गावर अवलंबून असते. निसर्ग लहरी असल्यामुळे साहजिकच शेतकरी दैववादी बनतो. मात्र प्रगत समाज त्याला अडाणी, परंपरावादी ठरवतो. खरे तर तो त्या संस्कृतीचे अपत्य असतो. त्याच्या सततच्या निसर्गसन्निध्यातून घेतलेल्या अनुभवातून त्याला काही गुढ गोष्टीचे आकलन झालेले असते. त्यातून लोक समजूती लोकविधी, लोकरूढी तयार झालेल्या असतात.

अशा प्रकारे कृषी संस्कृतीत वाढलेली मने आदिम संकल्पनांशी बांधली जातात. प्रा. आ. रू. तोरो म्हणतात, येथे भूतकाळच वर्तमान काळात गोठलेला असतो. एकूणच या विविध बाबींचा परिणाम म्हणून ग्रामीण माणसाची विशिष्ट अशी मनोरचना तयार झालेली असते. उदा. आनंद यादवांच्या गोतावळ्यातील 'नारबा' टारफुलातील धोंड्या...

ग्रामीण भागाच्या वैशिष्ट्यपूर्ण रचनेत जातीव्यवस्थेला अत्यंत महत्त्व आहे. प्रत्येक जातीची स्वतःपुरती एक वेगळी संस्कृती असते. तिचे स्वतःचे वेगळे विधी असतात. आज जातीव्यवस्था कोलमडून पडली असली तरीही प्रत्येक जाती आपापल्या रूढी, परंपरा, विधीनिषेध सांभाळताना दिसून येतात. ग्रामीण व्यक्ती कुटुंबाला, कुटुंब, जातीला आणि जात गावगाड्याला बांधलेली असते त्यामुळे कुटुंबाच्या परंपरा, जातीच्या परंपरा आणि गावगाड्याची बांधणी या ग्रामीण व्यक्तीवर प्रभाव टाकत असतात आणि हे सर्व घटक निसर्गाशी जोडले गेलेले असल्यामुळे ग्रामीण माणूस आदिमनोवस्था बाळगून जगत असतो. या जीवन पद्धतीत जगताना ग्रामीण माणसाला

16-17
31

An International Peer reviewed Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies (SRJIS) is provided the unique platform established by well-known academicians, research based university to create awareness among the youngsters, readers and contributors. SRJIS motivates to exchange innovations and ideas and Educational Practices Globally.

SRJIS Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies is an International Peer Reviewed Journal published online bi-monthly as well as printed Quarterly with an aim to provide a platform for researchers, practitioners, academicians and professional from diverse areas of all disciplines to bring out innovative research ideas & practices. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies is dedicated to publish high quality research articles on all aspects of education related to, Arts, Commerce, Science, Educational Technology, Information Communication and Technology, Education, Physical Education, Educational Psychology, English, Linguistics, Engineering, Management, Economics, Insurance, Business Marketing, Architecture, Public Administration, Political Science, Social Science, and related all disciplines. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies invites high quality research papers from all parts of the globe providing meaningful insights to research scholars.

Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies (SRJIS) is a Peer Reviewed, & Referred International Journal published Quarterly a year.

The Journal welcomes the submission of research papers, conceptual articles, manuscript, project reports, meet the general criteria of significance and academic excellence.



S. No. 37/1, Karnal-Delhi Road Bypass High way, Ambegaoan (BK), Pune, Maharashtra. 411048, India. Website: www.srjis.com, Email: editor@srjis.com

₹ 750/-

46 27



SRJIS
Online ISSN - 2278-8988
Printed ISSN- 2319-4766



International
Peer Reviewed

Referred
Quarterly

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

SPECIAL ISSUE OCT-DEC, 2016, VOL. 5, ISSUE -19

EDITOR-IN-CHIEF: DR. ANITA K. SHARMA

10

25 Non Ugc
2016-17



47

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTI DISCIPLINARY RESEARCH (IJMR)

Refereed Journal

ISSN 2277-9302
Vol. VI, Issue 5 (II), September 2016

	ಕನ್ನಡ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ವಾದ್ಯಗಳ ಕುರುಹು	92
22	Prof.M.R.Dodamani	
	ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಐತಿಹಾಸಿಕ ಕಾದಂಬರಿಗಳು	95
23	Prof.- M.B.Patil	
	ವಿಜಯಪುರ ಕನ್ನಡ	98
24	ಪೂರ್ಣಿಮಾ ಕೃಷ್ಣಪ್ಪಾ ಧಾಮಣ್ಣವರ	
	ವಿಭಜಿತ ದಕ್ಷಿಣ ಕನ್ನಡದ (ಉಡುಪಿ, ದಕ್ಷಿಣ ಕನ್ನಡ ಮತ್ತು ಕಾನರಗೋಡು) ಅತಿ ಹಿಂಗಳು - ಒಂದು ವಿವೇಚನೆ.	102
25	Dr. Madhava	
	"ಧಾರವೀಶಾಕವಿ ಮಾರ್ಕಂಡೇಯ ಎಮ್.ಕೆ.ನಾಯಕರವರ ಕಾವ್ಯದಲ್ಲಿ ನಿಸರ್ಗದ ವರ್ಣನೆ"	104
26	Ashwini L Nayk	
	ಶ್ರೀ ಕೆ.ವಿ.ವಿಜ್ಞಾನಕವರ, ಆಗಮಾವ : ಒಂದು ದೃಷ್ಟಿ	109
27	ಡಾ. ರಾಜೇಶ್ ಸಾಹೇಬರಾವ ಥಾಪೆ	
	ವಾಚನಾಂಶು ಬದಲನೆ ಪ್ರವಾಹ	112
28	Dr.Lata Dodhu Pawar	
	ಜಾಗತಿಕೀಕರಣಾಚಿ ಸಮಾಜಜೀವನಾಚಿ ಹೊಸರಾ ಪರಿಣಾಮ	116
29	ಪ್ರಾ. ಡಾ. ಸಂಧೀಪ ಆತ್ಮಾರಾಮ ಭೇಲೆ	

वाचनाचे बदलते प्रवाह

Dr.Lata Dodhu Pawar
Nashik Road,

आपल्याकडे मौखिक परंपरेचा खूप मोठा वारसा आहे. सुरुवातीचे सर्वच ज्ञान सांगीवांगी पध्दतीने एका पिढीतून दुसऱ्या पिढीकडे संक्रमित होत होते. दळणवळणाची साधने नव्हती तेव्हा विविध क्षेत्रातील लोक कलाकारांनी या ज्ञानाचा प्रसार प्रचार केल्याचे दिसून येते. जसे चासुदेव, पिंगळा, भगडी, गोंधळी, भुत्या, पोतराज, नंदीवाले, बहुरूपी, गोसावी, ज्योतीषी इ. हे लोक गावोगाव फिरून आपल्या कला दाखवत लोकांचे मनोरंजन करत ज्ञानाचा प्रसार करत. तसेच प्रवचन, हरिकथा, भजन, कवीर्तनातूनही ज्ञानाची देवाण-घेवाण चालत असे. या ज्ञानाचे स्वरूप अध्यात्म आणि जीवन, नैतिकता आणि जीवनव्यवहार, जीवन जाणिव्या यांच्याशी निगडित होते. त्याचे स्वरूप बोधात्मक होते. इंग्रजी राज्यात छापण्याची कला आली. मौखिक परंपरा संपून लिखित (मुद्रित) साहित्याची परंपरा सुरु झाली. पुस्तके लिहायला छापायला सुरुवात झाली आणि वाचनाची पध्दती बदलली. पुराणादिकांच्या सामुहिक वाचना-श्रवणाऐवजी एकट्याने एकांतात वाचन करणे शक्य झाले. वाचन ही एक वैयक्तिक गोष्ट बनली. छापिल मजकूर पुस्तक रूपात उपलब्ध होऊ लागल्यामुळे रिकाम्या वेळेचा उपयोग गप्पा गोष्टी, खाणे पिणे नाच गाणे पुराण, श्रवण ऐवजी वाचनात होऊ लागला. अशा प्रकारे इंग्रजी राज्यात वाचक वर्ग उदयास आला. सुरुवातीच्या वाचनाचा गरजा मनोरंजनापुरत्या मर्यादीत होत्या. नवशिक्षित मध्यमवर्गीय आपल्या फावल्या वेळेत वाचन करू लागला. वाचनासाठी आणलेल्या पुस्तकातून त्यांना पारचात्य जग धरबसल्या पाहता येत होते. त्यातून कांदवऱ्यांचा वाचनाची आवड निर्माण झाली आणि आपल्याकडे कांदबरी हा साहित्य प्रकार आला. ब्रिटीशांच्या प्रभावाखाली मुद्रणाचे युग अवतरले होते. त्यामुळे ज्ञानार्जन, ज्ञानप्रसार, लोकप्रबोधन, लोकशिक्षण करण्यासाठी वृत्तपत्रे व नियतकालिके निघाली. त्यांनी समाजसुधारकांचे विचार, प्रबोधनाचे चळवळीचे हेतू, जुन्या प्रथा परंपरांचे निर्धकता या गोष्टी समाजात दूरदूरपर्यंत पोहचविण्याचे काम केले हे करत असतांना नवा वाचक वर्ग आपोआपच तयार होत होता. तत्कालीन वर्तमानपत्र नियतकालिकांनी विष्णू शास्त्री चिपळूणकर, लोकहितवादी, महात्मा फुले, कृष्ण शास्त्री चिपळूणकर अशा अनेक समाजहितकर्त्यांचे विचार सर्वसामान्य जनतेच्या मनात रुजवत त्यांना वाचते लिहिते केले. नंतरच्या काळात खांडेकरांच्या लेखनीने लोकांना मोहिनी घालत वाचनवेडे केले. स्वातंत्र्यपूर्व काळातील पत्रलेखन उदा. तुलंगातील पत्रे, इंदिरा पत्रे, सुंदर पत्रे यांचे वाचकांना जसे आकर्षण होते तसेच स्वातंत्र्य काळात प्रकाशित झालेल्या क्रांतिकारकांच्या, देशभक्तांच्या चरित्रांनी वाचकांनी प्रेरित केले.

१९६० नंतर ग्रामीण साहित्यप्रवाहाने ग्रामीणांच्या वास्तव समस्यांचे दर्शन घडवत वाचकांना नवे साहित्य पुरविले. १९६५ नंतरच्या दलित साहित्य प्रवाहाने दलितांच्या, उपेक्षितांच्या दुःखाचे दर्शन घडवत एक नवा वाचक वर्ग तयार केला. या वाचकांच्या विचारांना परिवर्तनाची दिशा देण्याचा मोठा प्रयत्न केला. १९८० च्या दशकात दूरदर्शनचे आगमन झाले आणि १९९० पर्यंत विविध चॅनेल्स सुरु झाले इंटरनेट अत्याधुनिक मोबाईल यांनी मानवाची विचारप्रक्रिया विचलित केली. १९९२ पासून आपल्याकडे जागतिकीकरण सुरु झाले. जागतिकीकरणाने संपूर्ण जिवनात उलथा पालथ घडवून आणली. जीवनाच्या सर्व क्षेत्रात स्पर्धा सुरु झाली. बालवाडीच्या प्रवेशापासून ते मोठ्या पगाराची नोकरी पकडेपर्यंत स्पर्धाच स्पर्धा असते. या स्पर्धेत कुणालाही भाग घेता येतो. स्पर्धा सर्वासाठी खुली असते. साधन सामग्री सर्वासाठी उपलब्ध असते. पण ती घेण्यासाठीची क्षमता प्रत्येकाने स्वतःच आत्मसात केली पाहिजे. असा जागतिकीकरणाचा नियम सांगतो जागतिकीकरण हे भांडवल आणि नफाकेंद्रीत असते. जागतिकीकरणात कोणत्याही गोष्टीकडे ध्याबसायिक आणि स्पर्धात्मक नजरेतून पाहिले जाते. सर्वासाठी सर्व काही आहे पण ते लहून मिळवले पाहिजे. असे सांगण्यात येते. सरकारने जनतेचे भले करण्याची जबाबदारी घेऊ नये ते त्याचे काम नाही तर लोकांनीच स्पर्धेत टिकून स्वतःचे कल्याण करून घेतले पाहिजे असे हा नवा सिध्दांत सांगतो. सरकारने सर्व कल्याणकारी योजनांपासून दूर व्हावे आपला आकार आणि भूमिका मर्यादीत करावी. विकासाची सर्व क्षेत्रे खाजगीकरणाच्या ताब्यात दयावीत. अशी अपेक्षा असते याचाच अर्थ असा नव्या स्पर्धेत जो सबळ असतो तो टिकून राहतो आणि जो दुर्बल असतो तो नाहीसा होतो. हा निर्णय माणसाबरोबर त्याची भाषा त्याची संस्कृती त्याचे भावविश्व या सान्यांना लागू होते. गेल्या दोन दशकात

Nov UGC. 2015-16.

PRINT ISSN:2319-5789, ONLINE ISSN:2320-3145

(27)

Refereed & Indexed Journal

48

SCHOLARS WORLD

INTERNATIONAL REFEREED MULTIDISCIPLINARY
JOURNAL OF CONTEMPORARY RESEARCH

I.R.M.J.C.R.

Special Issue X : February 2016
"National Conference on Human Values
and Role of Higher Education"


Scientific Impact Factor:	3.552
Global Impact Factor:	0.311
Universal Impact Factor:	1.224
International Impact Factor:	0.654
Science Impact Factor:	0.48

Indexing/listing:

Directory of Open Access Journal- Sweden
Ulrich's Web Global Series Directory- USA
Open J-Gat- India
Advanced Science Index (ASI)-Germany
Cite Factor- Academic Scientific Journal- Canada- USA
Academic Keys- Unlocking Academic Careers
Yumpu- Switzerland
.docstock- Santa Monica- CA
DRJI- Directory of Research Journals Indexing- India
BASE- Bielefeld Academic Search Engine
Calameo- Publish, Share, Browse- USA
Indian Citation Index- India
Slide Share- News Letters- San Francisco
Scientific Indexing Services
WorldCat.org
Research Bible (Share your Research Maximize Your Social Impacts)
Georgetown University Library Washington DC
University of Saskatchewan, Canda- USA
Electronic Journals Library, Hamburg- Germany
Open Academic Journal Index- Russian Federation

Organised By

**Mahatma Gandhi Vidya
SMT. Pushpatali Hiray
Commerce Mahila Mahavidyalaya**

 **MAAZ PUBLICATIONS**

110.	Human Values and Its Role in Sustaining the Environment: A Review Article Dr. Pravin S.Patil and Dr. S. S. Tambe	371-372
111.	Effect of Perseverance on Emotional Intelligence of College Students Sameer Limbare, Yogendra Patil	373-377
112.	Role of Library in Value Development Mohan B. Nikumbh	378-380
113.	मानवी मूल्यांच्या जतन प्रक्रियेत संगीत कलेची उपयुक्तता अस्मिता सेवेकरी	381-384
114.	संत सेना महाराजांच्या अभंगातील मानवतावाद अहिरे सुनिल धर्माजी	385-386
115.	संत साहित्यातील मानवी मूल्ये - उच्चशिक्षणातील समावेश धनराजतोताराम धनगर, अरूण उत्तम पाटील	387-390

प्रस्तावना:
पुरातन काळापा
विविध परंपरा
स्वरूपात एका
जाणाच्या कथां
भारत हा जगात
अरण्यके व उ
उपपुराणे ही
शास्त्रात्मकता, म
कथा साहित्य प्र
१) धोस-ए
२) अनुभूती
३) कमीत
मनावर
बरील व्याख्या
व प्रसंग यांची
लेखक प. ग.
नव्हते तेव्हाच
मोठ्या भावाच्या
भारतीय संस्कृ
कथेत पतिव्रता
घेते. पुराणातील
करावा लागतो.
'पतिव्रता' स्त्री
दाखवतो.
या कथेतून म
दोन भावंडांमध्
स्वतःवर घेण्या
प्रसिध्द लघुक
भादनाशीलतेची
निवेदक मधल्या
व मुले हसतात
नये, अभद्र या
सांगते. वाईट र
ती पूडे असेल
असे सांगायला
सायंकाळी शा
पकडतो. संघ

Effect of Perseverance on Emotional Intelligence of College Students

Sameer Limbare¹, Yogendra Patil²

¹Assistant Professor, Dept of Psychology, ²Director, Physical Education
LBRD Arts and Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road

INTRODUCTION:

Trial and error learning should be regarded as a natural way of learning process and it indicates that every challenge is worth of achieving it. To keep effort continuous till you peel off every layer of your ability is perseverance. The present study aims to study the perseverance as an important and essential aspect of human values in relation to emotional intelligence. Nicholls (1978) found that children understanding of effort and ability changes dramatically with age. It also becomes essential if we are able to inculcate the perseverance early in students so that it becomes a habit for them. Not only to inculcate the perseverance in them but also to eradicate the belief about effort and ability. Dweck (2000) found that directly challenging a student's fixed mindset in which they ascribe their mistakes to lack of ability and improve achievement. We should be able to imbibe on student that learning involves mistakes doubts and ambiguity but consistent effort can help them to reach goals and develop skills. Perseverance requires the correct amount of Emotional intelligence. Students if come to know about their self and are able to know, understand and manage their emotions, which would support to keep their perseverance more strong and agile. If they understand the importance of self motivation and are able to motivate themselves, which would guide them through the stages of conflict and difficult situations. This self motivating factor can again take us back to the track of perseverance instead any kind of jerks in the process of learning and achieving challenges. Perseverance is reflected in several ways in persons obsessions with goal, his not giving up; in a person's obsession with goal, his not giving up the goal despite various problems, the large amount of time spent in the effort to reach the goal, hard work, focusing attention on the task until it is completed and so on. Emotional intelligence is an important component of educational domain. It plays a vital role in achievement and success of the individual. It is always appreciating that teachers should be trained to measure emotional intelligence of their students and handle them accordingly to their EQ level.

OPERATIONAL DEFINITIONS:

Perseverance - Perseverance is the tendency to persist with the effort in achieving a goal inspite of various difficulties. McClelland's concept of 'activity inhibition' is quite close to the concept of perseverance Rao and Moulik (1979).

In the present study emotional intelligence is undertaken for the research and the operational definitions are given by Goleman (1998).

Emotional Intelligence - Emotional intelligence refers to the capacity of recognizing our own feelings and those others, for motivating ourselves, and for managing emotions well in us and in our relationships

Self awareness (SA) - Knowing what we are feeling at the moment and using those preferences to guide our decision making; have a realistic assessment of our own abilities and well- grounded sense of self-confidence.

Managing emotions (ME) - Handling our emotions so that they facilitate rather than interfere with the task at hand; being conscientious and delaying gratification to pursue goals; recovering well from emotional distress.

Self motivation (MO) - Using our deepest preferences to move and guide us towards our goals, to help us take initiate and strive to improve, and to persevere in the face of setbacks and frustrations.

Empathy (E) - Sensing what people are feeling, being able to take their perspectives and cultivating rapport and attunement with a broad diversity of people.

ISBN No. 978-93-84198-49-7

59

29

महिला गौरवग्रंथ

८ मार्च २०१६ नागतिक महिला दिन

* संपादक *

ISBN No. 978 - 93 - 84198 - 49 - 7

डॉ. सुनिल कुचर • प्रा.सौ. लता गुप्ते



भारतीय महिलांचे स्थान : प्राचिन ते अर्वाचिन

प्रा. स्मिता ओंकारराव माळवे, मराठी विभाग
 के. विदु रामराव देशमुख कला व वाणिज्य
 महिला महाविद्यालय, नाशिक

पुराणकाळात 'स्त्री' चे स्थान उच्च होते. ऋग्वेद आणि उपनिषदांमध्ये याचा उल्लेख आहे. वैजयी आणि गार्गीसारख्या ज्ञानी विदुषींनी आद्य शंकराचार्यांना ज्ञानाच्या वाक्युद्धात हरवले होते. याचा उल्लेख उपनिषदांत सापडतो. मात्र वेदिक काळानंतर स्त्रीचे स्थान हळूहळू उतरणीला लागल्याचे आपणांस दिसून येते. खरं तर स्त्री व पुरुष ह्या एकाच नाण्याच्या दोन बाजू आहेत. मात्र कालांतराने 'स्त्री' च्या स्थानास निम्न स्तर प्राप्त होत गेला. मनु तर स्त्रीला 'पुरुषाच्या याचाचो दामो' संबोधतो. 'मनुस्मृती'ने असे अनेक उतारे आहेत जे स्त्री स्वातंत्र्याची, तिच्या अस्तित्वाचीच पायमल्ली करतात. सांस्कृतिक स्थित्यंतरे -

'स्त्री' रूप कालांतराने बदलत गेले. 'चूल आणि मूल' इतकेच स्थान परंपरेने आणि समाजाने तिच्यावर लादलेले होते. त्यात हळूहळू बदल होत होता. वैदिक काळाच्या आधी अंबिका, पार्वती, सरस्वती, सीता, सावित्री यांसारख्या अनेक रूपांतून स्त्रीचे वेगवेगळे दर्शन आपल्याला होते. वैदिक काळानंतर स्त्री जीवनात अनेक स्थित्यंतरे झाली.

परिवर्तन प्रत्येक गोष्टीचा धर्म आहे. तद्गतच स्त्री जीवनातही अनेक परिवर्तने होऊ लागली. सर्वच पातळ्यांवर याची प्रचिती येते. स्त्री जीवनात अनेक स्थित्यंतरे आली. तिला तिच्या हक्कांची आणि स्वातंत्र्याची जाणिव नव्याने होऊ लागली होती. खऱ्या अर्थाने स्व-अस्तित्वाचा प्रारंभ होऊ लागला होता. स्थित्यंतर केवळ एकच नव्हे सर्व पातळ्यांवर होत होते. सामाजिक, वैचारिक, सांस्कृतिक अशा पातळ्यांवर ते घडत होते. ती केवळ गृहकृत्यदर्श गृहिणी वा एकाच नव्हे तर अनेक भूमिकाही समर्थपणे पेलू शकते याची, जाणिव स्त्रीला होऊ लागली.

सामाजिक स्थान :-

राजा राममोहन रॉय यांनी स्त्री समता, स्वातंत्र्य आणि सती प्रथेविषयी सर्वप्रथम चळवळ सुरू केली. ब्रिटिशांच्या अजबल कालखंडात अनेक समाजसुधारकांनी स्त्री जीवनात सुधारणा आणण्याचा प्रयत्न केला. चानुबेण व्यवस्थेत सर्वांत शेवटचे स्थान क्षुद्रांचे! मात्र भारतीय परंपरा आणि समाज व्यवस्थेने स्त्रीला शुद्रांपेक्षाही खालचे स्थान बहाल केले. पावरलूनच आपल्याला स्त्रीच्या स्थानाची कल्पना येते. म.गांधींनी स्वातंत्र्य चळवळीत स्त्रियांना सहभागी करून घेतले. मात्र तरीही असाक्षरता, हुंडाबळी, आरोग्याकडे दुर्लक्ष, स्त्री-धुणहत्या, आर्थिक अस्थिरता यांसारख्या अनेक प्रश्नांना स्त्रीस तोंड द्यावे लागत होते. त्यामुळे सातत्याने तिचे स्थान इळमळीत होत राहिले.

समाजाने सातत्याने कोणता घटक दुर्लक्षित ठेवला असेल तर तो म्हणजे स्त्री हा घटक होय. सततचे शोषण आणि दुर्लक्षितता यामुळे तिच्या स्वत्वाची देखील तिला जाणिव होऊ नये हीच अपेक्षा जणू काही पुरुषसत्ताक समाज व्यवस्थेची होती, असे म्हटल्यास बाबगे ठरू नये. शिक्षण, मोकरी, आर्थिक स्थैर्य यापैकी कुठल्याच गोष्टीत स्वातंत्र्यांतर स्त्रीचे स्थान जास्त प्रमाणात आपल्याला दिसत नाही. परावलंबित्व, असाक्षरता, आर्थिक अस्थिरता आणि यामुळे स्त्री भक्कमपणे उभी राहू शकत नव्हती.

सद्यस्थिती :-

सामाजिक कुप्रथा परंपरेने पुढे चालत राहिल्या. १९६१ साली हुंडाबिरोधी कायदा सरकारने आणला. मात्र तरीही आजतागायत ही कुप्रथा मुरूच आहे. अनेक स्त्रियांचा यामुळे बळी गेला आहे. तरीही हे दुष्टचक्र सुरूच आहे. मुलगी झाली की तिला मारून टाकायचे किंवा मुलीचा गर्भ असेल तर लिंग परीक्षण करून तो गर्भच जन्माला येण्याआधी मारून टाकायचा. ह्या अशा अघोरी प्रथा अजूनही बऱ्याच ठिकाणी सुरू आहेत.

आजही शासन कितीही सोयी-सुविधा, सवलती या महिलांकरिता देत असो मात्र त्याचा प्रत्यक्ष लाभ त्यांच्यापर्यंत पोहचतो का? हाच खरा प्रश्न आहे. उदा. सरकारने स्त्रियांना ३३% आरक्षण राजकारणात दिले असले तरी त्याचा लाभ महिलांना खरंच मिळतो का? किंवा जरी त्या आरक्षणापाची ती निवडून आलीच तरी तिचा करविता व बोलविता धनी वेगळाच असतो, हे आपणांस सांगणे न लगे! महिला सरपंच, नगरसेविका या पदांवर विराजमान तर होतात मात्र त्यांचे

✓ Non UGC. 2015-16.

51

30

ISSN - 0974-2719

Indian Journal of Community Psychology



An official Publication of the
Community Psychology Association of India

Volume 12

Issue 1

March, 2016

- **Attitude towards Female Infanticide; An Impact of Literacy Level in Relation to Gender of Post Adolescents**
Anita M. Daryanani and Shalini Purohit 116-121
- **Adolescent Health and Health-risk Behaviours**
Chandra Prabha Pathak 122-129
- **Gender and Locality Differences in Body Image among College Students**
Rakesh Kumar Behmani and Suresh Kumar 130-138
- **Sensation Seeking and Internet Addiction among Girls and Boys**
Trupti Ambalal Chandalia and Minakshi D. Desai 139-144
- ✓ **Inculcating Industrial Values in Higher Education**
Sameer J. Limbare 145-150
- **Potential Entrepreneurial Qualities and Emotional Intelligence in India's Future Business Intellectuals: An Empirical Study**
Debasis Biswal and Indrani Mukherjee 151-160
- **Psycho Socio Problems of Mothers of Children with Intellectual Disability**
Hardeep Kaur 161-170

Many people are physically experiencing Syndrome other men of CBS who were Persons Ethiopia, them lost that 4 of sun rays years of (CBS) were please explain was used. Most of disease, aware or treatment manage.

Many people not there. If the image Syndrome name of a Bonnet with phantom vision was and mental cataracts. I not really 'visual' hal from those. The visual phenomenon

*Professor (C
Education and
© Community

Inculcating Industrial Values in Higher Education

Sameer J. Limbare*

Education plays a major in the development of a country. Contribution of values in higher education is desirable and important. The present study is explored the industrial values possessed by the industrial giants like TATA, Aditya Vikram Birla Group, Wipro, Infosys, and Tata Consultancy Services. The investigator has analyzed the industrial values and has suggested values needed in our higher education for being competitive and to excel in our field and also for development in Higher education. The study revealed that achievement motivation leads to better teaching and developing competence and sustaining character improves quality of faculty. Further the investigator found that we need to encourage creativity among teachers and students for research and avoid humility for consistent development of the faculty.

Keywords: Values, Industrial values, Higher Education

INTRODUCTION

With liberalization and globalization of economic activities, the need to develop skilled human resources of a high caliber is imperative. Consequently, the demand for internationally acceptable standards in higher education is evident. Towards achieving this, Higher education institutions may establish collaborations with industries, network with neighborhood agencies / bodies and foster a closer relationship between the "world of skilled work" and the "world of competent-learning" (NAAC, 2010). India is at present in the crucial period of development and progress. As stepping into the 21st century our nation has to go along with other fast changing nations. The current scenario in higher education is not encouraging for us. Nor it is in the state that it can be passed on the next generation. The present paper focuses on the need to inculcate industrial values in higher education to keep it alive in the competition at global level.

Objectives:

- To do the survey of industrial values.
- Contribution of values in Higher education.

INTRODUCTION

The method of the paper is purely descriptive and is analytical in nature based on the extraction of the data from the secondary sources of information.

Present Scenario: At present India has 42 Central Universities, 1 Central Open University, 59 Institutions of National Importance, 13 State Open Universities, 284 State Public Universities, 105 State Private University, 05 Institutions under State Legislature Act, 39 Government Deemed

*Assistant Professor, Department of Psychology, LBRD Arts and Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road, India

among
, M. A.

Online]
es.htm.
itute of

och, J.
al, and
Press.
enbach
al, and

nternet
, 50
college

ssation
Cyber

lers in
of the

fiction.

order.
erican

ddicts
esling
ersity.

oushr.

1, 2015
5, 2015
2, 2016

Non UGC. 2016-17.

52

3D



SRJIS

Online ISSN - 2278-8808
Printed ISSN - 2319-4766



An International
Peer Reviewed

Referred
Quarterly

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

SPECIAL ISSUE OCT-DEC, 2016. VOL. 5, ISSUE -19

EDITOR IN CHIEF : YASHPAL D. METRAGANIAR, Ph.D.

174-178	40.	GLOBALIZATION: A MULTIDISCIPLINARY PERSPECTIVE <i>Dr. Ramesh D. Darekar</i>	240-243
179-185	✓ 41.	IMPACT OF VALUES ON RESEARCH <i>Dr. Sameer Limbare</i>	244-249
186-190	42.	RIVER POLLUTION AND ITS IMPACT: PANCHGANGA RIVER IN KOLHAPUR DISTRICT A CASE <i>Dr. Satish Dhanawade & Dr. Sindhu Kakade</i>	250-257
191-193	43.	STRENGTHS AND WEAKNESSES OF QUANTITATIVE AND QUALITATIVE RESEARCH <i>Dr. Ganesh Raosaheb Patil</i>	258-262
194-201	44.	IMPORTENTS OF ACTION RESEARCH IN SOCIAL PSYCHOLOGY <i>Dr. Gosavi Shubhangi R.</i>	263-268
202-221	45.	IMPACT OF GLOBALIZATION ON INDIAN MILK PRODUCTION <i>Dr. Jayashri P. Jadhav</i>	269-274
	46.	ROLE OF DESIGN IN SOCIAL RESEARCH <i>Dr. K. T. Khairnar</i>	275-280
222-224	47.	A CONCEPTUAL ANALYSIS OF CURRENT TRENDS IN EDUCATIONAL SOCIOLOGY - AN INTERNATIONAL AND EUROPEAN PER SPECTIVE. <i>Prof. Pravin Mansing Kamble</i>	281-287
225-232	48.	THE ROLE OF RESEARCH METHODOLOGY IN BUSINESS <i>Prof. Smt Sujata Shivajirao Patil</i>	288-293
233-235	49.	VALUE OF ARCHAEOLOGICAL RESEARCH IN HISTORY <i>Pradeep Hanmant Nikam</i>	294-298
236-239	50.	ROLE OF REGIONAL POLITICAL PARTIES IN MAHARASHTRA <i>Prof. A. B. Raut</i>	299-302

IMPACT OF VALUES ON RESEARCH

Dr. Sameer Limbare

*Associate Professor Department of Psychology, LBRD Arts and Commerce
MahilaMahavidyalaya Guruji Nagar, Jail Road, Nashik Road*

Introduction: Valuable researches are conducted in a variety of institutions: academic, non-academic, industries and government organizations. The research gives out results which meet general expectations of the society and are useful to the immediate environment. The results which are in line with the expectations are actually creative and may have a important and rare value. The results and values behind them should be given its due importance and recognition. We see that research process has various factors involved in it. The correlation between variables is studied investigated and analyzed to reach to a scientific conclusion. These conclusions are based on facts but there are other factors which play a vital role in understanding and interpreting those facts and those are values. The present study focuses on the impact of values on research and its process. Values influence our attitude and behavior. Different types of values and their correlation have a drastic and wholesome change on the research. Values maneuver the thoughts and actions whenever attitudes are inactive. The study of values has covered broad disciplines. The classic conception of values in anthropology was introduced by Kluckhohn and Strodtbeck (1961) and in their views; values answer basic existential questions, helping to provide meaning in people's lives. In research, values are so natural that to conduct a value free research is difficult. The present empirical study focuses on the role of values and how they guide the investigator research.

Rationale: Values do affect social sciences. Values impact is not only on the researcher but also on the subject. The question arising here is how to account for values of individual actors engaged in social interaction. But if we note carefully that at the same time, while